मध्यप्रदेश की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां (1)

प्रो. आर.पी. पांडेय

मध्यप्रदेश भारत का हृदयस्थल होने के साथ-साथ संस्कृतियों के उद्भव एवं विकास के संबंध में भी समृद्ध है। मध्यप्रदेश के धरातल पर जितनी भी नदियां जैसे नर्मदा, ताप्ती, सोन, चंबल आदि विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन पर प्राग ऐतिहासिक संस्कृतियों से लेकर वर्तमान समय तक समृद्ध पुरावशेष प्राप्त होते हैं। यह प्रदेश ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के अवशेष के संदर्भ में भी समृद्ध है। इस क्षेत्र में ग्राम्य संस्कृतियों के समृद्धतम् अवशेष प्राप्त हुए हैं जो कि द्वितीय नगरीकरण के विकास की प्रथम कड़ी के रूप में जाने जाते हैं। वस्तुतः ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां भारतवर्ष में दो स्थिति में प्राप्त होती हैं। नगरी सभ्यता एवं ग्राम्य सभ्यता के नाम से जानी जाती हैं। नगरी सभ्यता के अंतर्गत सैंधव सभ्यता के समकक्ष संस्कृतियां समाहित हैं जबकि ग्राम सभ्यता के अंतर्गत संस्कृतियां ग्रामीण परिवेश एवं क्रमबद्ध विकास को दर्शाती हैं। मध्यप्रदेश में भारतवर्ष की प्रमुख ग्राम सभ्यता से संबंधित संस्कृतियां पाई जाती हैं।

(1)- कायथा की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
(2)- अहाड़ की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
(3)- मालवा की ताम्रपाषाणिक संस्कृति
(4)- जोरवे की ताम्रपाषाणिक संस्कृति

कायथा ताम्रपाषाणिक संस्कृति मुख्यतया नर्मदा, बेतवा, चंबल नदी घाटियों में प्राप्त

Scanned with CamScanner

है। इस संस्कृति की खोज वी.एस. वाकणकर द्वारा कैथा नामक पुरास्थल पर प्रथमतः 1965 में की गई थी। बाद में इस स्थल पर अनेक उत्खनन हुए एवं इस संस्कृति से संबंधित विशेष पात्र परम्परा के अवशेष प्राप्त हुए। ये पात्र मजबूत, पतली गढ़न, भूरे रंग के हैं। इन पर भूरे रंग की स्लिप मिलती है जिसके ऊपर बैंगनी रंग के रेखाचित्र मिलते हैं। इस संस्कृति में अन्य सामग्रियों में चूड़ियाँ, अगेट, कार्नेलियन, क्रिस्टल (स्फटिक) मनकों द्वारा हार निर्मित किये गये हैं। एक पात्र के अंदर 40,000 छोटे-छोटे मनके रखे हुए मिले हैं। इस संस्कृति में मकान के भी अवशेष मिलते हैं। जो गोल एवं चौकोर आकार हैं। खम्भे एवं दीवारें बांस-बल्लियों से निर्मित थी। छाजन संभवतः घास-फूस का होता रहा होगा। इस संस्कृति की तिथि 2000 ईसापूर्व से 1800 ई.पू. के मध्य की मानी जाती है।

इस संस्कृति के उपरांत अहाड़ संस्कृति के अवशेष मध्य प्रदेश प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के मृद्भाण्ड काले लाल रंग के हैं जिन पर श्वेत रंग से चित्रण है। इनके साथ-साथ यहाँ से विभिन्न औजार, उपकरण एवं अन्य पुरा निधियाँ भी प्राप्त हुई हैं। ताम्र उपकरणों में चिपटी कुल्हाड़ियां, छुरियां, चाकू, छल्ले, मुद्रिकायें एवं छड़ें मुख्य हैं। इस संस्कृतियों से मकानों के अवशेष प्राप्त भी प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति में मिट्टी के मनके भी प्राप्त हुए हैं।

Scanned with CamScanner

एवं वृषभ मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं। इस संस्कृति तिथि 1700 ई.पू. से 1500 ई.पू. की रखी गयी है।

मालवा संस्कृति के अवशेष प्रमुख रूप से खरगौन जिले में नवदाटोली से प्राप्त हुए हैं। यह पुरास्थल नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। मालवा संस्कृति विशिष्ट पात्र परम्परा से जानी जाती है। इस संस्कृति के पात्र हल्के लाल एवं गुलाबी रंग के हैं जिनके ऊपर काले रंग से चित्रण किया गया है। इस संस्कृति में लघु पाषाण उपकरण, मृणमूर्तियाँ मिलती हैं। रेडियोकार्बन तिथियों के आधार पर इस संस्कृति की 1500 ई.पू. से 1200 ई.पू. की निर्धारित की गई है।

जोरवे ताम्रपाषाणिक संस्कृति का मुख्य पुरास्थल महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में जोरवे नामक पुरास्थल है। यहाँ पर एक विशेष प्रकार की परम्परा दृष्टिगोचर होती है। पात्र परम्परा के विकास के आधार पर इस संस्कृति को दो भागों में विभाजित किया जाता है। इस संस्कृति के पात्र क्रीमस्लिप्ड वेयर (Cream slipped ware) हैं। मध्यप्रदेश में इस पात्र परम्परा के विषय में प्रथमतः जानकारी नवदाटोली पुरास्थल से हुई थी। मध्यप्रदेश में इस पात्र परम्परा के अवशेष बहुत कम हैं। इस संस्कृति की तिथि 1100 ई.पू. से 700 ई.पू. तक प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्रामीण ताम्रपाषाणीय सभ्यता के अवशेष मध्य प्रदेश में मिलते हैं। जिनकी तिथि 2000 ई पू से लेकर 700 ई पू. तक की प्राप्त होती है। इस प्रकार यह तिथियाँ प्रथम नगरीकरण को समेटे हुए द्वितीय नगरीकरण तक के विकास क्रम को दर्शाती हैं। 600 ई पू में पूरे भारतवर्ष में द्वितीय नगरीकरण से संबंधित अनेक पुरास्थल मिलते हैं। इस प्रकार छठवीं वाती ई पू में द्वितीय चरण के नगर संपूर्ण भारतवर्ष में विकसित होकर प्रस्थापित होते हैं।

Scanned with CamScanner